कार्यक्रम विवरण

उद्घाटन सत्र

प्रातः 10.00 से 11.30 बजे

मुख्य अतिथि – स्वामी व्याप्तानंद जी
प्रमुख आचार्य रामकृष्ण मिशन आश्रम नारायणपुर

विशिष्ट अतिथि – प्रोफेसर पी.सी. पतंजलि – पूर्व कुलपति पूर्वांचल विश्वविद्यालय (उ.प्र.)

प्रमुख वक्ता – आदरणीय श्री इन्द्रेश कुमार – भारत समरसता मंच

अध्यक्षता – प्रोफेसर एन.पी. दीक्षित, कुलपति दुर्ग विश्वविद्यालय

सम्मान – सामाजिक समरसता के क्षेत्र में प्रमुख योगदान हेतु समाजसेवियो का सम्मान

प्रथम अकादमिक सत्र

प्रातः 11.30 से 1.30 बजे तक

भोजन अवकाश

दोपहर 1.30 से 2.00 बजे तक

द्वितीय अकादमिक सत्र

दोपहर 2.00 से 4.00 बजे तक

बौद्धिक - श्री इन्द्रेश कुमार

समापन

राष्ट्रीय समरसता संगोष्ठी

सामाजिक समरसता में छत्तीसगढ़ का योगदान

दुर्ग विश्वविद्यालय

तथा

श्री शंकराचार्य महाविद्यालय, जुनवानी

के संयुक्त तत्वावधान में **भारत समरसता मंच**

के सहयोग से आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में

आप सादर आमंत्रित हैं।

दिनांक – 29 अगस्त 2017, दिन मंगलवार
समय – प्रातः 10 बजे
आयोजन स्थल – श्री शंकराचार्य महाविद्यालय, जुनवानी, भिलाई

संरक्षक
प्रोफेसर एन.पी. दीक्षित
कुलपति
दुर्ग विश्वविद्यालय
दुर्ग

आयोजक

डॉ. एस. के. त्रिपाठी
कुल सचिव
दुर्ग विश्वविद्यालय,
दुर्ग

डॉ. रक्षा सिंह
प्राचार्य
श्री शंकराचार्य महाविद्यालय
जुनवानी, भिलाई

विषय सार

" सामाजिक समरसता में छ.ग. का योगदान "

ईशोपनिषद् में वर्णित है - "ओम ईशावास्यमिदं सर्वम् यत्किञ्चं जगत्यां जगत्" "ईदं सर्वम् खल्विदं बह्म"। अर्थात् इस दृश्यमान जगत में जो कुछ भी चर-अचर, जड़-चेतन है वह सब ब्रम्हप्रसूत है, ईश्वर जन्य है, स्वयं ईश्वर सब में विद्यमान है। **पुण्यभूमि भारत** इस आदर्श से सदैव अनुप्राणित रही है तथा इस समरस समाज में शक, हुण, कुषाण, यवन पारसी, तुर्क मुगल सब समाहित हो गए, समरस हो गए। नाना प्रकार के धर्म, पंथ, वर्ण, कुल, जातियों और भाषाओं के अस्तित्वमान होने के बाद भी **भारतीय** की संज्ञा से अभिहित होना हम सबके लिए सर्वोच्च गौरव और प्राथमिकता का हेतु है।

सामाजिक समरसता में छत्तीसगढ़ का योगदान अप्रतिम है। पं. सुन्दरलाल शर्मा, श्रद्धेय गुरुघासीदास जी, आदरणीय मिनिमाता, अमर शहीद वीरनारायण सिंह, शहीद गेंदलाल, शहीद गुंडाधुर आदि का योगदान चिरस्मरणीय है। प्रस्तावित बौद्धिक विमर्श सामाजिक समरसता को सुदृढ़ बनाने एवं समरसता को अभिवृद्ध करने की दिशा में भारत समरसता मंच के सहयोग से दुर्ग विश्वविद्यालय एवं श्री शंकराचार्य महाविद्यालय जुनवानी, भिलाई का एक संयुक्त प्रयास है।

दुर्ग विश्वविद्यालय

छत्तीसगढ़ के नगर-द्वय की संज्ञा से अभिहित दुर्ग-भिलाई को राज्य शासन द्वारा विश्वविद्यालय की सौगात प्राप्त हुई, तदनुकूल 24 अप्रैल 2015 को दुर्ग विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। संभाग के पाँच जिलों की उच्च शिक्षा संबंधी अपेक्षाओं का केन्द्र दुर्ग विश्वविद्यालय अपने दो वर्षों के शैशव काल में भी अकादमिक श्रेष्ठता एवं बौद्धिक विमर्श के प्रति समर्पित है। बौद्धिक विमर्श की जो परंपरा प्रारंभ हुई है आयोजित विमर्श **श्री शंकराचार्य महाविद्यालय** जुनवानी के साथ एवं भारत समरसता मंच के सहयोग से उसी दिशा में एक और प्रयत्न है।

आयोजन सचिव
प्रो. विकास पंचाक्षरी
मो. 9926175577

संयोजक
डॉ. शकील हुसैन
मो. 9424275617

उपविषय

- छत्तीसगढ़ मे सामाजिक समरसता के प्रमुख स्तम्भ।
- सामाजिक समरसता एवं साहित्य धर्मिता
- सामाजिक समरसता एवं सामाजिक आंदोलन
- सामाजिक समरसता के विविध आयाम।
- सामाजिक समरसता में छत्तीसगढ़ के योगदान से संबंधित अन्य विषय।

शोधपत्र आमंत्रण एवं प्रकाशन

प्राध्यापक एवं प्रबुद्ध वर्ग से संबंधित विषयों पर शोधपत्र आमंत्रित हैं। हिन्दी में टंकण हेतु कृतिदेव 10 तथा अंग्रेजी में टंकण हेतु टाईम्स न्यू रोमन 12 में टंकित शोध पत्र अधिकतम 2000 शब्दों में दिनांक 28/08/2017 तक ssmbhilai@hotmail.com तथा submit@durguniversity.ac.in पर प्रेषित कर सकते हैं। हार्डकॉपी 29/08/2017 को प्रातः पंजीकरण काउंटर पर जमा कर सकते हैं। संपादक मण्डल द्वारा चयनित शोधपत्रों का प्रकाशन ISBN क्रमांक युक्त पुस्तक के रुप में विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा।

पंजीकरण

प्रातः 9.00 से 10.00 बजे तक, पंजीकरण शुल्क 200/- मात्र

आयोजन समिति

डॉ. ए.के. खान	–	9827470364
डॉ. अरविन्द शुक्ला	–	9752289902
डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव	–	9827178920
डॉ. एस.के. दास	–	7587308022
डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी	–	7489164100
डॉ. अर्चना झा	–	9826105343
डॉ. जे. दुर्गा प्रसाद राव	–	9826632819
डॉ. वी. के. सिंह	–	8319342450
डॉ. सुबोध द्विवेदी	–	9926499963
डॉ. एस.के. श्रीवास्तव	–	9300608471